IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 7, Issue 1, July 2019
Impact Factor: 4.819

धार्मिक प्रकृति और धर्म के कार्य

Dr. Archana Varma
Associate Professor, Department of Psychology
D. G. (P. G.) College, Kanpur, India

मनोविज्ञान धर्म की बातो का कहॉ तक समर्थन करता है और उन्हें मानवजीवन के लिए कहॉ तक हितकर बताता है, इन सब बातों के पूर्व यह जानना आवश्यक है कि धर्म शब्द का अर्थ क्या है ? धर्म शब्द का उपयोग मानव कर्तव्य का बोधक है इसका उपयोग मजहब के लिये भी होता है। सर्वोतम धर्म तो वह है जो हमें परमानंद की प्राप्ति करवाता है। धर्म के इस अर्थ में केवल यही प्रश्न मनोविज्ञान में उठ सकता है कि मनुष्य की कर्तव्य बुद्वि उसके भीतरी जन्मजात स्वभाव का अंग है या वातावरण के अनुसार है। यदि मानव में कर्तव्य के भावना हो तो वह सुखी रहेगा या दुखी **?**

इन प्रश्नों के उत्तर मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार से दिये है इसके लिये सर्वप्रथम पुरुषार्थ को समझना जरुरी होगा। ‘‘पुरुषार्थ’’ धर्म का दुसरा अर्थ है। यह चार पुरुषार्थो में से एक है। मनुष्य स्वभाव की पुर्णता चारो पुरुषार्थो की प्राप्ती से ही होती है। जो व्यक्ति दुसरों के सेवा में अपने आप को समर्पित नहीं करता वह समाज में सम्मान नहीं पाता। केवल मनुष्य में ही यह शक्ति है कि वह दुसरों के हितों को ही अपने हित के समान माने और उनकी पूर्ति के लिये सदा प्रयत्नशील रहें, तभी वह सम्मान का भागी रहेगा और उसे समाजिक सुरक्षा प्राप्त होगी।

संदर्भ सूचि :

[1]. The Elementary Forms of religious life (1912). **bekby nqf[kZe**
[2]. A Theoretical Basis of Human Behaviour, Pedological Semminar **LVsuyh gkWy**
[3]. The Psychological of learning. **xqFkjh**
[4]. MORAL EDUCATION (1925)
[5]. The Future of an Illusion – **flxeaM QzkbM**